Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 2

प्राचीन और मध्यकालीन भारत

SIERRA INNOVATIONS

प्राचीन और मध्यकालीन भारत

क्र.स.	**अध्याय**	**पेज न.**
	इकाई-**2** (प्रीलिम्स) प्राचीन और मध्यकालीन भारत की प्रमुख विशेषताएं, घटनाएँ और उनकी प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक प्रणालियाँ।	
	Unit-1 (मेन्स) भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कर्तिक इतिहास हड़प्पा सभ्यता से **10**वीं शताब्दी ई. तक	
1.	**हड़प्पा की सभ्यता** • हड़प्पा सभ्यता की खोज • हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल • हड़प्पा सभ्यता की विशेषताएं ○ राजनीतिक विशेषताएं ○ आर्थिक विशेषताएं ○ सामाजिक-सांस्कतिर्क विशेषताएं • हड़प्पा सभ्यता का पतन और लुप्त होना	**1**
2.	**वैदिक युग (**1500-600 **ईसा पूर्व)** • वैदिक साहित्य • प्रारंभिक / ऋग्वैदिक काल (**1500-1000** ईसा पूर्व) ○ राजनीतिक संरचना ○ आर्थिक संरचना ○ सामाजिक-सांस्कतिर्क संरचना • उत्तर वैदिक काल (**1000-600** ईसा पूर्व) ○ राजनीतिक संरचना ○ आर्थिक संरचना ○ सामाजिक-सांस्कतिर्क संरचना	**9**
3.	**जैन धर्म और बौद्ध धर्म** • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • जैन धर्म बनाम बौद्ध धर्म • जैन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच समानताएं • अन्य नास्तिक संप्रदाय	**16**

4.	**महाजनपद (**600-300 **ईसा पूर्व)** • मगध के उत्थान के कारण • हर्यंक राजवंश (**545-412** ईसा पूर्व) • शिशुनाग राजवंश (**413** ईसा पूर्व से **345** ईसा पूर्व) • नंद राजवंश (**345-321** ईसा पूर्व) • महाजनपदों के काल में प्रशासनिक व्यवस्था • विदेशी आक्रमण	**25**
5.	**मौर्य साम्राज्य** • अशोक के शिलालेख • मौर्य वंश • मौर्य प्रशासन • मौर्य साम्राज्य के दौरान अर्थव्यवस्था	**31**
6.	**मौर्योत्तर काल** • मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण • विदेशी शासन राजवंश • स्वदेशी शासन राजवंश	**42**
7.	**संगम युग** • संगम युग के महत्वपूर्ण राज्य • संगम युग के दौरान का जीवन • संगम साहित्य	**49**
8.	**गुप्त युग** • गुप्त साम्राज्य के शासक • गुप्त प्रशासन • गुप्त अर्थव्यवस्था • गुप्त युग के दौरान समाज और संस्कृति • गुप्त साम्राज्य का पतन	**54**
9.	**गुप्तोत्तर काल** • क्षेत्रीय विन्यास का काल • उत्तर भारत के शासक राजवंश ○ मैत्रक ○ मौखरि ○ अभीर वंश ○ हर्षवर्धन • दक्षिणी भारत और पूर्वी भारत के शासक राजवंश ○ इक्ष्वाक ○ चालुक्य ○ कांची के पल्लव	**62**

10.	**प्रारंभिक मध्यकालीन भारत (**750-1200AD) • गुर्जर-प्रतिहार (**8**वीं शताब्दी ई. - **11**वीं शताब्दी ई.) • बंगाल के पाल (**8**वीं-**12**वीं शताब्दी) • राष्ट्रकूट (**8**वीं - **10**वीं शताब्दी ई.)	**69**

11.	**चोल साम्राज्य**
	• राजनीतिक इतिहास
	• प्रशासनिक संरचना
	• कला और वास्तुकला
	  ○ अर्थव्यवस्था
	  ○ समाज
	• चोल-चालुक्य युद्ध
	• चोल साम्राज्य का अंत
		76

12.	**संघर्ष का युग (**1000-1200AD) • देवगिरी के यादव • वारंगल के काकतीय • द्वारसमुद्र के होयसल **राजपूतों का उदय** • राजपूत राज्य • राजपूतों का महत्व	**83**
इकाई - 2 (मेन्स) 11वीं से 18वीं शताब्दी ई. तक भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कतिक्क इतिहास।		
13.	**अरब आक्रमण** • सिंध की अरब विजय • गजनवी • भारत में तुर्की आक्रमण की सफलता के कारण	**92**
14.	**दिल्ली सल्तनत** • गुलाम/इलबरी राजवंश (**1206-1290)** • खिलजी वंश (**1290-1320)** • तुगलक वंश (**1320-1413)** • सैय्यद वंश (**1414-51)** • लोदी राजवंश (**1451-1526)** • दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन, आर्थिक और सामाजिक जीवन • दिल्ली सल्तनत का पतन	**97**

यूनिट - 2 (मुख्य) मुगल शासक और उनका प्रशासन, मिश्रित संस्कृति का उदय		
15.	**मुगल साम्राज्य** • मुगल साम्राज्य के बादशाह ○ हुमायूं ○ अकबर ○ जहांगीर ○ शाहजहाँ ○ औरंगजेब • मुगल साम्राज्य का पतन	109
16.	**मराठा साम्राज्य और क्षेत्रीय राज्य** • मराठों का उदय ○ शाहजी भोंसले ○ शिवाजी राजे भोंसले ○ पेशवा ○ महादजी सिंधिया • मराठों का प्रशासन • मराठों का पतन • उत्तर मुगल क्षेत्र	130
यूनिट- 2 (प्रीलिम्स) 19वीं और 20वीं सदी में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन		
17.	**मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन** • मध्यकालीन भारत में दर्शन • भक्ति आंदोलन • सूफीवाद • सिख धर्म	144
18.	**सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन** • भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधारक • हिंदू सुधार आंदोलन • मुस्लिम सुधार आंदोलन • पारसी सुधार आंदोलन • सिख सुधार आंदोलन • थियोसोफिकल आन्दोलन	159

1
CHAPTER

सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

- **दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता ।**
- **मेसोपोटामिया** और **मिस्र** की सभ्यताओं के **समकालीन।**
- **भारतीय उपमहाद्वीप** के **उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित**।
- **1853** - ए कनिंघम द्वारा एक हड़प्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल था।
- **1921** - दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज (सबसे पहले खोजा गया पुरातात्विक स्थल)। इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- **1922** - आरडी बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो की खोज।
- मूलतः एक **नदी सभ्यता।**
- **कांस्य युगीन सभ्यता।**
- इस सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता इसलिए कहा जाता है** क्योंकि **सर्वप्रथम 1921** में **पाकिस्तान के** शाहीवाल जिले के **हड़प्पा नामक स्थल** से **इस सभ्यता की जानकारी** प्राप्त हुई।

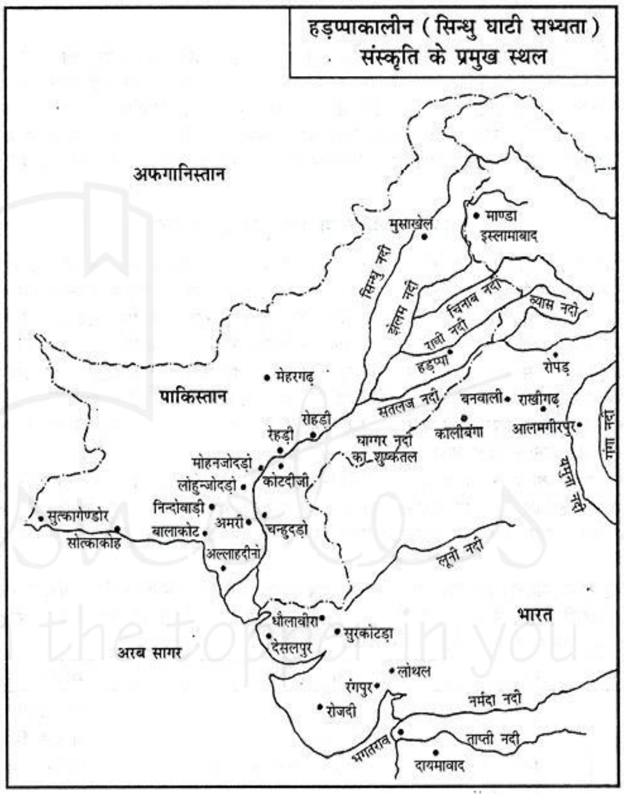

भौगोलिक विस्तार

- **क्षेत्रफल-** लगभग **13 लाख वर्ग किमी**
- **विस्तार-** सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- **उत्तरतम स्थल-** जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)
- **सुदूर दक्षिणी स्थल**- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)
- **पश्चिमी स्थल**- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)
- **सुदूर पूर्वी स्थल**- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। "अन्न भंडार का शहर"।	रावी	• 6 अन्न भण्डारो की एक पंक्ति। • यहां आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले • ताबूत शवाधान • लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा • तांबे की बैलगाड़ी • लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक • देवी माँ की टेराकोटा आकृति। • एक कमरे की बैरक • कांस्य के बर्तन।

		• गढ़(उठे हुए भू भाग पर) • पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित ।	सिंधु	• विशाल स्नानागार (आनुष्ठानिक स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा • नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा • देवी माँ की मुहर • योगी की मूर्ति • पशुपति मुहर • दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति • मेसोपोटामिया की मुहरें • नग्न महिला नर्तकी की कांस्य छवि • शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात रत्नों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	• 6 वर्गों में बंटा हुआ • तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क • जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) • चावल की भूसी के साक्ष्य • दोहरा शावाधन • अग्नि वेदियां • जहाज का टेराकोटा मॉडल • माप के लिए हाथीदांत का पैमाना • फ़ारस खाड़ी की मुहर
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	• गढ़ के बिना एकमात्र शहर • मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। • ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप • बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल • कांस्य की खिलौना गाड़ी
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	• अग्नि वेदियां • पकी हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं , मिट्टी की ईंटों का प्रयोग • कुओं वाले घर • जल निकासी व्यवस्था नहीं • पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा चरण दोनों के प्रमाण दिखते है
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	• जल संचयन प्रणाली • तूफानी जल निकासी व्यवस्था • स्टेडियम • 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख) • 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।
रंगपुर (1931) (गुजरात)	महर	• पूर्व + परिपक्व हड़प्पा चरण के अवशेष • पत्थर के टुकड़े के साक्ष्य

बनावली (1973-74) (हिसार, हरियाणा)	सरस्वती	• पूर्व + परिपक्व + उत्तर हड़प्पा चरण • हल का टेराकोटा मॉडल • कोई जल निकासी प्रणाली नही • जौ के दाने • लापीस लाजुली (राजवर्त) • त्रिजय सडको वाला एकमात्र स्थल
राखीगढ़ी (1963) (हरियाणा)		• भारत में सबसे बड़ा आईवीसी स्थल • एक छिन्न हुई महिला आकृति
सुरकोटडा (1964) (कच्छ, गुजरात)		• घोड़े के अवशेष और कब्रिस्तान • भांड शवाधान • अंडाकार कब्र
अमरी (1929) (सिंध, पाकिस्तान)	सिंधु	• गैंडे के साक्ष्य
रोपड़ (पंजाब, भारत)	सतलज	• आजादी के बाद खोदा जाने वाला पहला स्थल • कुत्ते को इंसान के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य • अंडाकार गर्त शवाधान • ताम्बे की कुल्हाड़ी
आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)	यमुना	• टूटी हुई तांबे की ब्लेड
दैमाबाद (महाराष्ट्र)	प्रवरा	• कांस्य चित्र (गैंडे, बैल, हाथी और रथ के साथ सारथी)

सनौली-

2005 में सनौली उत्खनन 1.0

- 116 कब्रों की खोज की गई।
- **ताम्रपाषाण काल में भारत के सबसे बड़े ज्ञात कब्रिस्तान में से एक के रूप में संदर्भित।**
- **शवाधान** सिंधु घाटी सभ्यता से **अलग** हैं।
- **शरीर के पास व्यवस्थित फूलदान**, **कटोरे** और **बर्तन।**
- **सैनिकों के शवों** के साथ **दबे बर्तनों में चावल** के साक्ष्य मिले।
- **8 एंथ्रोपोमोराफिक आंकड़े** (कुछ ऐसा जो इंसानों जैसा दिखता है)।
- मानवरूपी आकृतियाँ मिली।

2018 में सनौली उत्खनन 2.0

- **2018** में फिर से **प्रकाश में आया** जब एक **किसान ने खेत की जुताई करते समय** जमीन में **पुरावशेष** पाए जाने **की सूचना दी।**
- **घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले रथ** (लगभग 5000 वर्ष पुराने) पाए गए।
- **तांबे की तलवार, युद्ध ढाल** आदि जैसे कई हथियार **पाए गए।**
- इस बार **मृदभाण्डों** के साथ **लकड़ी के चार पैरों वाले ताबूत**
- **जानवरों को काबू करने के लिए चाबुक** मिला है, जिसका अर्थ है कि यहाँ रहने वाली जनजाति जानवरों को नियंत्रित करती थी।
- **महिला** + **पुरुष योद्धा** भी तलवारों के साथ दबे पाए गए हैं।
- हालांकि **दफनाने से पहले उनके टखनों के नीचे के पैरों को काट दिया गया था।**

मृदभाण्ड

- **गैरिक मृदभांड** (OCP) संस्कृति।
- **उत्तर परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के समान** लेकिन कई अन्य पहलुओं में इससे अलग है।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

राजनीतिक विशेषताएँ

- **नगर नियोजन-**
  - **किलाबंधी**
  - **सुनियोजित सड़कें**
  - कस्बों में **उन्नत जल निकासी** व्यवस्था।
  - **शहर**- दो या दो से अधिक भाग।
    - **पश्चिमी भाग** - छोटा लेकिन ऊँचा - गढ़- शासक वर्ग के कब्जे में।
    - **पूर्वी भाग-** बड़ा लेकिन निचला- आम या कामकाजी लोगों का निवास -ईंटों से बने घर।
  - **हड़प्पा** और में **मोहनजोदाडो** दोनों में एक **गढ़** था। (इन दो स्थलों को आईवीसी की राजधानी कहा जाता **है**)
  - कस्बों में एक आयताकार ग्रिड पैटर्न या जिसमें **सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं**।
  - **1 या 2 मंजिला मकान** थे।
  - **मंदिर या महल** जैसी कोई बड़ी स्मारकीय/ एतिहासिक- संरचना **नहीं** पायी गयी है ।
  - **निर्माण** के लिए **पकी** और कच्ची **ईंटों** और **पत्थरों** का **उपयोग।**
  - **मकान कच्ची की ईंटों** से बने होते थे, जबकि **जल निकासी प्रर्णाली पक्की ईंटों से** बनाई जाती थी।
- **विशाल स्नानागार-**
  - गढ़ के टीले में
  - **ईंटों से बना** एक टैंक जिसका उपयोग स्नान के लिए किया जाता था।
  - टैंक तक जाने के लिए सीडियाँ थी।
  - **माप-** 11.88 मीटर लम्बा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा।
  - **टैंक का निचला भाग जली हुई ईंटों से** बना था।
  - **बगल के कमरे में** एक **बड़े कुएं** से पानी निकाला जाता था , जिसे **नाले में खाली** कर दिया जाता था।
  - कपड़े बदलने हेतु साइड रूम।
- **धान्यागार-**
  - **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत**, जो 45.71 मीटर लंबी और 15.23 मीटर चौड़ी।
  - **हड़प्पा**- 15.23 मीटर लंबी और 6.09 मीटर चौड़ी नदी के किनारे स्थित 6 अन्न भंडारों की दो पंक्तियों की उपस्थिति।
  - वृत्ताकार ईंट के चबूतरे की पंक्तियाँ मिलीं जो **अनाज ताड़ने के लि**ए थीं, (वहाँ मिले **गेहूँ और जौ के साक्ष्य** से पता चलता हैं।)
  - **कालीबंगा**- दक्षिणी भाग में, ईंट से बने चबूतरे की उपस्थिति जो शायद अन्न भंडार के लिए उपयोग किए जाते थे।
- **जल निकासी व्यवस्था-**
  - हर घर में अपना **आंगन, निजी कुआं और हवादार स्नानागार** होता था।
  - इन **घरों का पानी गली की नालियों में जाता था** जो या तो ईंटों या पत्थर की स्लैब से ढके होते थे।
  - हड़प्पा के लोग **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान** देते थे ।

आर्थिक विशेषताएँ

- **कृषि-**
  - सिंधु नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण **सिंधु क्षेत्र उपजाऊ** था।
  - जिसके कारण मैदानी इलाकों में समृद्ध **जलोढ़ मिट्टी का जमाव** हुआ (सिंध क्षेत्र की उर्वरता का उल्लेख सिकंदर के इतिहासकार ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी किया था)
  - जली हुई इंटो से बनी दिवारो की उपस्थिति से प्रमाण मिलता है कि क्षेत्र बाढ ग्रस्त था।
  - **बीज नवंबर** में **बोए** जाते थे और **अप्रैल** में फसल काटी जाती थी ।
  - **कटाई** के लिए **पत्थर के दरांती** का **उपयोग।**
  - **नहरों द्वारा सिंचाई** का **अभाव।** हालाँकि, शोरतुग़ई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य खोजे गए हैं।
  - **पानी जमा करने के लिए अफगानिस्तान** और **बलूचिस्तान** के कुछ हिस्सों में नालियों से घिरे **गबरबंद** या **नालों का निर्माण** किया गया।
  - **कालीबंगा** के पूर्व-हड़प्पा चरण में **जुताई के साक्ष्य** मिले हैं ।
  - **फसलें**- दो प्रकार के गेहूं और जौ, राई, तिल, खजूर, सरसों और मटर। (बनावली में जौ के साक्ष्य, लोथल में चावल के साक्ष्य)।
  - **धोलावीरा** में **जलाशयों का उपयोग** कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता था।
  - दुनिया में **कपास का उत्पादन करने वाले पहले लोग सिंधु** थे। यूनानियों ने इसे सिंधन (सिंध से प्राप्त) कहा।
  - **हल का टेराकोटा मॉडल- बनावली** में खोजा गया।
  - **वस्तु विनिमय** के लिए **अनाज का उपयोग।** किसान ने अनाज पर कर का भुगतान करते थे और इनका उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया जाता था।
  - इस अवधि के दौरान **दोहरी फसल की प्रथा** शुरू हुई।

- **पशुपालन-**
  - लोगों ने **पशुचारण** का **अभ्यास** किया।
  - वे **भेड़, मवेशी, बकरी, सूअर और भैंस** जैसे जानवरों को पालते थे।
  - **बिल्लियों** और **कुत्तों** को भी पालतू बनाया गया था।
  - **हाथियों** को भी पाला गया - **गुजरात।**
  - **कूबड़ वाला बैल** - हड़प्पावासियों का पसंदीदा
  - **ऊंट** और **गधे** - भार ढोने वाले पशु।
  - **खरगोश**, **जंगली पक्षी**, **कबूतर** भी मौजूद थे।
  - **गैंडे के** साक्ष्य- अमरी, लोथल में पाए गए घोड़े का एक टेराकोटा मॉडल और घोड़े के अवशेष सुरकोटडा में पाए गए।

- **व्यापार एवं वाणिज्य-**
  - **वस्तु विनिमय प्रणाली** प्रचलित।
  - **पत्थर, धातु, खोल** आदि का **उपयोग करके व्यापार** किया जाता था।
  - **मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क** सुमेर, सुसा और उर में पाए गए हड़प्पा मुहरों से स्पष्ट होता है।
  - **लोथल** के **बंदरगाह का उपयोग कपास के निर्यात** के लिए किया जाता था।
  - **निप्पुर** से मिली **मुहर** में **हड़प्पा लिपि** और एक **गेंडे का चित्रण** है।
  - **क्यूनिफॉर्म शिलालेख मेसोपोटामिया** और **हड़प्पावासियों के बीच व्यापारिक संपर्कों का उल्लेख** करता है। इसमें "**मेलुहा**" नाम का उल्लेख है जो **सिंधु क्षेत्र** को और दो व्यापारिक स्टेशनों- दिल्मन और माकन को दरकिनार करते हुए मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संपर्क को **संदर्भित करता है।**
  - **हड़प्पा की मुहरें फारस की खाड़ी के प्राचीन स्थलों से प्राप्त** हुई हैं।
  - **हड़प्पावासियों द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं -** सोना, चांदी, तांबा, टिन, लैपिस लाजुली, सीसा, फ़िरोज़ा, जेड, कारेलियन और नीलम।
  - हड़प्पा के **बाह्य व्यापार को प्रमाणित करने वाले साक्ष्य-**

- ✓ **मोहनजोदड़ो से बेलनाकार मुहरों की खोज**,
- ✓ **हड़प्पावासियों द्वारा मेसोपोटामिया के सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग**,
- ✓ **हड़प्पा में खोजे गए विदेशी दुनिया में प्रचलित ताबूत शवाधान** , और
- ✓ **मेसोपोटामिया की मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की आकृति।**

सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताएँ

 # शिल्प उत्पादन

- बर्तन, नाव, मनके, मुहरें, टेराकोटा की वस्तुओं का **निर्माण** किया जाता था
- **ईंट की चिनाई** की कला जानते थे
- **धातुओं की रंगाई** और उनके **प्रगलन** की कला **जानते** थे
- **सीसा, कांस्य, टिन का** बड़े पैमाने पर **उपयोग**

प्रस्तर प्रतिमा -

- **परिष्कृत पत्थर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ**।
- **हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** में पाई गई पत्थर की मूर्तियाँ - **त्रि-आयामी खंडों** के लिए उत्कृष्ट उदाहरण ।
- **उदा**. शेलखड़ी से बने दाढ़ी वाले पुजारी और लाल बलुआ पत्थर से बना नर धड़।

कांस्य कास्टिंग

- **'लॉस्ट वैक्स' तकनीक का उपयोग** करके बनाई गई कांस्य मूर्तियाँ।
- इसमें, **मोम की आकृतियों को पहले मिट्टी के लेप से ढक दिया जाता है** और **सूखने दिया** जाता है - **मोम** को **गर्म** किया जाता है और मिट्टी के आवरण में बने **एक छोटे से छेद के माध्यम से बाहर निकाला जाता है**। इस प्रकार बनाया गया **खोखला साँचा** पिघले हुए धातु से भर दिया जाता हैं । जो वस्तु का मूल आकार लेता है।
- **धातु** के **ठंडा होने के बाद**, **मिट्टी** का आवरण **पूरी तरह से हटा** दिया जाता है।
- **धातु ढलाई** एक **सतत परंपरा** प्रतीत होती है।
- **प्रमुख केंद्र-** दैमाबाद, महाराष्ट्र

टेराकोटा

- **पत्थर और कांसे की मूर्तियों की तुलना में मानव रूपों के प्रतिनिधित्व अपरिपक्व होता हैं**।
- **गुजरात** और **कालीबंगा** में अधिक **यथार्थवादी।**
- **सबसे महत्वपूर्ण** - देवी माँ।

मुहर

- लगभग **200 मुहरों की खोज** की गई
- **ज्यादातर स्टीटाइट से बनी** । कुछ टेराकोटा, सोना, एगेट , चर्ट, हाथी दांत से बनी ।
- अधिकांश मुहरें 2 x 2 आयाम के साथ **चौकोर आकार** की थीं
- **मुख्य** रूप से **व्यावसायिक उद्देश्यों** के लिए उपयोग की जाती थी, हालांकि इनका उपयोग **ताबीज के रूप में भी** किया जाता था।
- **मुहरें चित्रात्मक** थीं जिनमें बाघ, हाथी, बैल, भैंस, गैंडा, बकरी, गौर और अन्य जानवरों के चित्र शामिल थे।
- **मुहरों की लिपि का अर्थ** अब तक **नहीं निकाला गया है**
- **सबसे महत्वपूर्ण मुहर**- मोहनजोदड़ो से पशुपति महादेव मुहर
- **लोथल**- **फारस की खाड़ी की मुहरें** मिली हैं।

मनके

- **सोने, चांदी, तांबे, कांस्य** और **अर्द्ध कीमती पत्थरों** से बने ।
- मुख्य रूप से **बेलनाकार**
- **लोथल और धोलावीरा**- मनके बनाने की दुकान

- **भार और मापन-**
  - वज़न मापन के लिए एक **द्विआधारी प्रणाली** का पालन किया।
  दशमलव प्रणालियों से अवगत।
  - **अनुपात की इकाई** 16 समकक्ष से 13.64 ग्राम थी।
  - **16 छटाँक** = 1 सेर और **16 आने** = 1 रुपये के बराबर थे।

- **कच्चे माल के प्रमुख स्रोत -**
  - **चूना पत्थर -** सुक्कुर और रोहडी के चूना पत्थर की पहाड़ियों खनन।
  - **ताम्बा -** खेतड़ी, राजस्थान से ताम्रपाषाण गणेश्वर-जोधपुर संस्कृति और हड़प्पा सभ्यता के बीच संबंध।
  - **टिन -** तोसम (हरियाणा), अफगानिस्तान और मध्य एशिया
  - **सोना -** ऊपरी सिंधु या कर्नाटक के कोलार क्षेत्रों की रेत से।
    - पिकलीहल के मनके
    - **अर्द्ध कीमती पत्थर -** गुजरात और अफगानिस्तान, मनका निर्माण के लिए प्रयुक्त

- **धातु, उपकरण और हथियार-**
  - **तांबे-कांस्य के औजार** बनाना जानते थे।
  - उन्होंने **तीर, भाला, सेल्ट और कुल्हाड़ी** जैसे हथियार बनाने **के लिए चकमक पत्थर की** (रोहड़ी चेर्ट से बने), **तांबे** और **हड्डियों**, **हाथीदांत** के औजारों **का उपयोग** किया।
  - **लोहे का ज्ञान नहीं**

- **मृदभाण्ड-**
  - **चाक** और **अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का उपयोग**
  - कृष्ण लोहित मृदपात्र।
  - **भंडारण जार**, **कटोरे**, **व्यंजन**, **छिद्रित जार**, आदि के रूप में **उपयोग** किया जाता है।
  - पीपल के पत्ते, मछली के शल्क, प्रतिच्छेदन, जिगजैग पैटर्न, क्षैतिज बैंड, पुष्प और जीव ज्यामितीय डिजाइन आदि का उपयोग।
  - **आधार समतल** था।
  - लाल रंग के मृदभाण्डों को काले रंग के डिजाइनों से चित्रित किया गया था।
  - **हड़प्पा -पूर्व चरण में 3 मृदभांड संस्कृतियां-**
    - **नाल संस्कृति** (पीले रंग, पीले और नीले रंग के साथ चित्रांकन)
    - **झोब संस्कृति** (लाल मृदभाण्ड और काले रंग में चित्र)
    - **क्वेटा** (पीले मृदभाण्ड, काले रंग के द्वारा साथ चित्रांकन)।
- **धर्म-**
  - **धर्मनिरपेक्ष समाज**
  - **देवी माँ की पूजा** की जाती थी - शक्ति या देवी माँ के रूप में पहचाने जाने वाली **अर्द्ध-नग्न टेराकोटा मूर्तियों की खोज** की गई, हड़प्पा में **एक मुहर की खोज** की गई जिसमें **पृथ्वी / देवी माता** को उनके गर्भ से उगने वाले पौधे के साथ दर्शाया गया है।
  - **पशुपति महादेव / प्रोटो शिव की पूजा** की जाती थी- एक त्रिमुखी पुरुष भगवान, योग मुद्रा में बैठे और दायीं ओर गैंडा और भैंस से घिरे हुए **,** बाईं ओर हाथी और बाघ से घिरे हुए उनके पैरों के समीप दो हिरण।
  - **प्रकृति को पूजते थे -** पीपल के पेड़ को सबसे पवित्र माना जाता था।
  - **पूजे जाने वाले जानवर** - कूबड़ वाला बैल, भैंस, बाघ पक्षी और गैंडा।
  - **पौराणिक पशुओं की पूजा करते थे**।
    - अर्ध-मानव और अर्ध-पशुवर जीव।
  - **मंदिर-पूजा का कोई प्रमाण नहीं**।
  - **जादू, आकर्षण और बलिदान** में **विश्वास**।
    - **बलिदानों को दर्शाने वाली मुहरें**।
    - **कालीबंगा**, **बनावली** और **लोथल** की **अग्निवेदी।**

- **लिपि-**
  - **पहली बार 1853 में** खोजी गयी ।
  - **पूरी लिपि पहली बार 1923 में** खोजी गई थी, लेकिन यह अभी भी अनसुलझी है।
  - **सबसे बड़े हड़प्पा शिलालेख** में **26 संकेत** हैं और ज्यादातर मुहरों पर दर्ज हैं।
  - **लिपि –** चित्रात्मक
  - **लेखन की कला से अवगत –** बाएँ से दाएँ लेखन
- **राजनीतिक संगठन-**
  - इतिहासकारों के अनुसार, **व्यापारियों के एक वर्ग द्वारा शासित**।
  - **एक दूसरे से स्वतंत्र शहर**।
  - उनके **बीच कोई संघर्ष नहीं**।
  - लोगों की **बुनियादी नागरिक सुविधाओं की देखभाल के लिए नगर निगम** जैसा संगठन।

पतन

- **1900 ईसा पूर्व के बाद** पतन शुरू।
- **अन्य स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति धीरे-धीरे फीकी** पड़ गई।
- **उत्तर हड़प्पा चरण** /उप-सिंधु संस्कृति- **कृषि**, **पशुपालन** , **शिकार** और **मछली पकड़ने पर निर्भर थी।**
- पश्चिम एशियाई केंद्रों के साथ **व्यापार संपर्कों के अंत** के साक्षी बने।
- **लगभग 1200 ईसा पूर्व**, **पंजाब** और **हरियाणा** के कुछ स्थलों पर, वैदिक संस्कृति से जुड़े **धूसर मृदभांड** और **चित्रित धूसर मृदभांड** पाए गए।
- पतन के बाद पश्चिमी पंजाब और बहावलपुर में **झूकर संस्कृति का विकास** हुआ। इसे **ग्रेवयार्ड-एच संस्कृति भी कहा जाता था**।

2 CHAPTER
वैदिक काल (1500-600BC)

- वैदिक युग की **शुरुआत भारत-गंगा के मैदानों पर आर्यों के आधिपत्य से हुई**।
- **आर्य** मूल रूप से **स्टेपी/ मैदानी क्षेत्र में रहते थे।**
- बाद में वे **मध्य एशिया चले गए** और फिर लगभग **1500 ईसा पूर्व भारत के पंजाब क्षेत्र में आ गए**। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने **खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश** किया था।
- वे **सबसे पहले सप्त सिंधु क्षेत्र** (सात नदियों की भूमि) **में आकर बसे**। ये सात नदियाँ - सिंधु, ब्यास, झेलम, परुष्णी (रावी), चिनाब, सतलज और सरस्वती।
- **भाषा**- इंडो-यूरोपीय।
- **औजार** - सॉकेटेड कुल्हाड़ी, कांस्य की कतार और तलवारें।
- **घोड़ों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई** (दक्षिणी ताजिकिस्तान और पाकिस्तान में स्वात घाटी से घोड़ों के पुरातात्विक साक्ष्य खोजे गए)।

वैदिक साहित्य

- **वेद**

ऋग्वेद	• यह **वेदों में सबसे प्राचीन** है। • **1028 स्तोत्रों का संग्रह**। • **दस मंडलों** या पुस्तकों **में विभाजित**। • **भाषा**- वैदिक संस्कृत। • **उत्पत्ति**- 1500-1000 ई.पू. । • **स्तोत्र सूक्त के रूप में जाने जाते हैं** जो आमतौर पर अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं। • ईश्वरीय आनंद की तलाश में **देवी-देवताओं को समर्पित**। • **इंद्र**- **प्रमुख देवता** (स्वर्ग का राजा)। • **अन्य देवता**- आकाश देव, वरुण, अग्नि देव और सूर्य देव • **मंडल 2 - 7** - ऋग्वेद का **सबसे पुराना हिस्सा**, उन्हें "**पारिवारिक पुस्तकें**" कहा जाता है क्योंकि वे संतों / ऋषियों के विशेष परिवारों से संबंधित हैं। • **मंडल 8** - ज्यादातर कण्व वंश द्वारा रचित। • **मंडल 9** - भजन पूरी तरह से सोम को समर्पित हैं। • **मंडल 1** - इंद्र और अग्नि को समर्पित। • **मंडल 10** - नदियों की स्तुति करने वाला नदी स्तुति सूक्त इसमें पाया जाता हैं। • **एकमात्र जीवित पुनरावृत्ति**- शाकल शाखा। • **उपवेद**- आयुर्वेद
सामवेद	• साम का **अर्थ** है "**माधुर्य**"। • **मंत्रों की पुस्तक**। • **16,000 राग** । • प्रार्थना की किताब या "**मंत्रों के ज्ञान का भंडार**"। • **1875 श्लोकों का उल्लेख**- केवल 75 मूल, शेष ऋग्वेद से। • **उपवेद**- गंधर्व वेद
यजुर्वेद	• यजुर नाम का **अर्थ "बलिदान"** है। • विभिन्न **बलिदानों से जुड़े अनुष्ठानों और मंत्रों** से संबंधित। • **दो प्रमुख विभाग-**

	○ **शुक्ल यजुर्वेद/वजस्नेय/श्वेत यजुर्वेद**- इसमें केवल मंत्र होते हैं। इसमें माध्यन्दिन और कण्व पाठ शामिल हैं। ○ **कृष्ण यजुर्वेद** - इसमें मंत्र और गद्य भाष्य शामिल हैं। इसमें कथक, मैत्रायणी, तैत्तिरीय और कपिस्थलम पाठ शामिल हैं। • **वाजसनेयी संहिता**- शुक्ल यजुर्वेद में संहिता। • **उपवेद** - धनुर्वेद
अथर्ववेद	• **ब्रह्मा वेद के नाम से भी जाना जाता हैं**। • मुख्य रूप से **99 रोगों के उपचार पर केंद्रित**। • दो ऋषियों- **अथर्व और अंगिरा से जुड़े।** • उपचार उद्देश्यों के लिए **काले और सफेद जादू का अभ्यास** शामिल है। • **वैदिक संस्कृत में** रचित। • **6,000 मंत्रों** के साथ 730 स्तोत्र हैं जो 20 पुस्तकों में विभाजित हैं। • **दो पाठ** - पिप्पलाद और सौनाकिय संरक्षित हैं। • **मुंडक उपनिषद** और **मांडुक्य उपनिषद अंतर्निहित** हैं। • यह **लोगों की लोकप्रिय मान्यताओं और अंधविश्वासों का वर्णन** करता है। • **उपवेद** - शिल्प वेद

ब्राह्मण-ग्रन्थ

- चारों वेदों के **संस्कृत भाषा में प्राचीन समय में** जो **अनुवाद** थे 'मन्त्रब्राह्मणयोः वेदनामधेयम्' के अनुसार वे ब्राह्मण ग्रंथ कहे जाते हैं।
- **चार मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ** हैं- ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ।
- **वेद संहिताओं के बाद** ब्राह्मण-ग्रन्थों का **निर्माण** हुआ है।
- प्रत्येक वेद में एक य एक से अधिक ब्राह्मण हैं।
- **प्रत्येक वेद के अपने ब्राह्मण हैं**।
- **ऋग्वेद** के **दो ब्राह्मण** हैं - (1) ऐतरेय ब्राह्मण और (2) कौषीतकी।
- **ऐतरेय** में **40 अध्याय** और **आठ पंचिकाएँ** हैं, इसमें गवामय, अग्निष्टोमन, द्वादशाह , सोमयागों, अग्निहोत्र तथा राज्याभिषेक ऐतरेय ब्राह्मण जैसा ही है।
- **कौषीतकी** से पता चलता हैं कि **उत्तर भारत में भाषा के सम्यक अध्ययन पर बहुत बल** दिया जाता था।

आरण्यक

- **अध्ययन गाँवों से दूर** अरण्यों/वनों में होता था, इसीलिए इन्हें आरण्यक कहते है।
- **गृहस्थाश्रम में यज्ञविधि का निर्देश** करने के लिए **ब्राह्मण-ग्रन्थ उपयोगी** थे और उसके बाद **वानप्रस्थ आश्रम** में **सन्यासी आर्य यज्ञ के रहस्यों और दार्शनिक तत्वों का विवेचन** करने वाले आरण्यकों का अध्ययन करते थे।
- **उपनिषदों का विकास इन्हीं आरण्यकों से** हुआ। आरण्यको का **मुख्य विषय आध्यात्मिक** तथा **दार्शनिक चिंतन** है।

उपनिषद

- चारों वेदों से सम्बद्ध 108 उपनिषद गिनाये गए हैं, किन्तु **11 उपनिषद ही अधिक प्रसिद्ध** हैं-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर।
- इनमें **छान्दोग्य और बृहदारण्यक अधिक प्राचीन** हैं।

वेदान्त

- **वेदों का "निष्कर्ष"** (अंत), भारत का **सबसे पुराना पवित्र साहित्य** है।
- **उपनिषदों (वेदों का विस्तार) पर लागू** होता है।
- **वेदांत मीमांसा** ("वेदांत पर चिन्तन"**), उत्तरा मीमांसा** ("वेदों के अंतिम भाग पर चिन्तन"), और **ब्रह्म मीमांसा** ("ब्राह्मण पर चिन्तन")।
- **3 मौलिक वेदांत ग्रंथ -**
    - **उपनिषद** (बृहदारण्यक, चंदोग्य, तैत्तिरीय और कथा जैसे लंबे और पुराने उपनिषद सबसे पसंदीदा हैं) ।
    - **ब्रह्म-सूत्र** (वेदांत-सूत्र), उपनिषदों के सिद्धांत की बहुत संक्षिप्त, एक-शब्द की व्याख्या।
    - **भगवद्गीता** ("भगवान का गीत") अपनी अपार लोकप्रियता के कारण, उपनिषदों में दिए गए सिद्धांतों के समर्थन के लिए तैयार की गई थी।
- **बलिदान, समारोहों की निंदा** करता है और **वैदिक काल के अंतिम चरण** को दर्शाता है।

वेदांग

- स्मृति ग्रंथों का हिस्सा क्योंकि **वे परंपरा द्वारा सौंपे जाते हैं**।
- वेदांग का **शाब्दिक अर्थ "वेदों के अंग"** है।
- **600 ईसा पूर्व के दौरान संग्रहित हुआ**।
- **पूरक ग्रंथ**- वैदिक परंपराओं की समझ से संबंधित है।
- **मानवीय मूल** के माने जाते हैं और **सूत्रों के रूप में लिखे** गए हैं (विभिन्न विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले संक्षिप्त कथन हैं)।
- **6 वेदांग** इस प्रकार हैं-
    - **शिक्षा -**
        - **स्वर शास्त्र का अध्ययन।**
        - यह संस्कृत वर्णमाला के अक्षरों और वैदिक पाठ में शब्दों को जोड़ने और व्यक्त करने के तरीके पर केन्द्रित हैं।
    - **छंद -**
        - **पद्य का अध्ययन**, **काव्य सामग्री** से संबंधित।
        - **प्रत्येक पद्य में अक्षरों की संख्या**, उनके भीतर **निश्चित आकार/रूप का विश्लेषण** शामिल है।
    - **व्याकरण -**
        - **विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों और वाक्यों के निर्माण** को उपयुक्त को स्थापित करने के लिए व्याकरण और भाषा विज्ञान का विश्लेषण।
    - **निरुक्त -**
        - **व्युत्पत्ति विज्ञान** का **अध्ययन**, विशेष रूप से **पुरातन शब्दों के अर्थ को समझाने** के **संबंध** में।
    - **कल्प -**
        - **अनुष्ठान निर्देशों पर केन्द्रित** (बहुत पुराने और अप्रचलित) ।
        - **जीवन की घटनाओं से जुड़े संस्कार**, विवाह, जन्म और अन्य अनुष्ठानों के लिए वर्णित प्रक्रियाओं से संबंधित। यह व्यक्तिगत कर्तव्य और उचित आचरण की अवधारणाओं का भी अन्वेषण करता है।
    - **ज्योतिष -**
        - **शुभ समय का अध्ययन**, जो अनुष्ठानों का मार्गदर्शन और समय-निर्धारण करने के लिए ज्योतिष और खगोल विज्ञान का उपयोग करने की वैदिक प्रथा पर आधारित है।

प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व)

भौगोलिक पृष्ठभूमि

- **सप्त सिंधु** नामक सात नदियों की भूमि/देश में आकर रहने लगे।
- उनके क्षेत्र में **अफगानिस्तान**, **पंजाब** और **हरियाणा** के वर्तमान भाग **शामिल** हैं।
- **सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित** है और **सरस्वती सबसे अधिक पूजनीय** (पवित्र नदी) है।
- **हिमालय** या **गंगा** का **कोई उल्लेख नहीं**।
- **समुंद्र** को **पानी** के **संग्रह** के रूप में जाना जाता हैं, सागर के रूप में नहीं।

राजनीतिक संरचना

- राजन के नाम से जाने जाने वाले राजा के साथ **राजशाही रूप।**
- **पितृसत्तात्मक परिवार।**
- ऋग्वैदिक काल में **जन सबसे बड़ी सामाजिक इकाई** थी।
- **सामाजिक समूहीकरण :- कुल** (परिवार) → **ग्राम** → **विसु** → **जन।**
- **जनजातीय सभाओं को सभा और समितियाँ कहा जाता** था।
- आदिवासी राज्यों के **उदाहरण -** भरत, मत्स्य, यदु और पुरु।

सामाजिक संरचना

- **महिलाओं को सम्मानजनक स्थान** प्राप्त था।
- उन्हें **सभाओं** और **समितियों में भाग लेने की अनुमति** थी।
- **महिला विद्वान** थीं (अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववर और घोष)।
- **एकपतित्व** का **प्रचलन** था लेकिन **राजघरानों** और **कुलीन परिवारों में बहुविवाह** होता था।
- **बाल विवाह अप्रचलित ।**
- **सामाजिक भेद-भाव मौजूद** थे लेकिन **कठोर** और **वंशानुगत नहीं** थे।

आर्थिक संरचना

- वे **चरवाहे** और **पशुपालन** करने वाले लोग थे।
- वे **कृषि** का अभ्यास करते थे ।
- **परिवहन के लिए नदियों का उपयोग** करते थे।
- **सूती** और **ऊनी कपड़ों** को काटकर इस्तेमाल करते थे।
- प्रारंभ में, **व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से** किया जाता था, लेकिन बाद में **'निष्का' नामक सिक्कों का उपयोग** किया जाने लगा।

शिक्षा

- **मंत्रों का पाठ** किया - **छात्रों द्वारा दोहराया गया।**
- **उद्देश्य** - व्यक्ति की बुद्धि को तेज करना और उसके चरित्र का विकास करना।
- मुख्य रूप से **चरित्र में धार्मिक** और पिता द्वारा अपने **पुत्रों को प्रदान** की गई ।
- इस बारे में **कोई निश्चितता नहीं** है कि **लेखन की कला लोगों को ज्ञात थी या नहीं**।

संस्कृति और धर्म

- **प्रकृतिवाद बहुदेववाद**- वे प्राकृतिक शक्तियों जैसे पृथ्वी, अग्नि, वायु, वर्षा, आदि को देवताओं के रूप में पूजते थे।
- **पूजा की विधि-** यज्ञ।
- **प्रमुख देवता**-

- ◦ **इंद्र** (गड़गड़ाहट के देवता) - सबसे महत्वपूर्ण देवता जिन्हें 250 भजन समर्पित किए गए हैं। पुरंदर या किलों को तोड़ने वाला भी कहा जाता है।
- ◦ **अग्नि** (अग्नि के देवता) - दूसरे सबसे प्रमुख देवता। भगवान और लोगों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। जिन्हें 200 भजन समर्पित किए गए हैं।
- **महिला देवता** - उषा और अदिति।
- **कोई मंदिर नहीं** और कोई मूर्ति पूजा नहीं।
- **ऋग वैदिक भजन** ('सूक्ति') देवी-देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं।
- **पूजा** और **बलिदान** - मुख्य रूप से 'प्रजा और पशु' के लिए यानी बढ़ती आबादी, मवेशियों की रक्षा, पुत्र प्राप्ति और बीमारी के खिलाफ किए जाते थे।
- **महत्वपूर्ण पुजारी**- महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र।

उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

भौगोलिक विस्तार

- **आर्य पूर्व की ओर बढे** और **पश्चिमी** और **पूर्वी उत्तर प्रदेश** (कोसल) और **बिहार पर कब्जा** कर लिया।
- धीरे-धीरे **ऊपरी गंगा घाटी में बस** गए।
- भारत के **तीन विस्तृत विभाजन** है-
    - ◦ **आर्यावर्त** (उत्तर),
    - ◦ **मध्यदेश** (मध्य भारत) और
    - ◦ **दक्षिणापथ** (दक्षिण)

राजनीतिक संरचना

- **छोटे राज्यों को मिलाकर महाजनपद जैसे बड़े राज्य** बनाए गए।
- **'जन' 'जनपद' बनने के लिए विकसित हुआ और राजा की शक्ति** में **वृद्धि** हुई।
- **बलिदान**- राजसूय (अभिषेक समारोह), वाजपेय (रथ दौड़) और अश्वमेध (घोड़े की बलि) - राजा द्वारा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए किए जाते थे।
- **राजा की उपाधियाँ-** राजाविस्वजानन, अहिलभुवनपति, विराट, भोज, एकरात और सम्राट।
- **राजा का पद वंशानुगत** हो गया।
- **सभाओं** और **समितियों का महत्व कम** हो गया।
- **"राष्ट्र" शब्द का प्रयोग पहली बार हुआ।**
- **आदिवासी सत्ता प्रादेशिक** बन गई।
- **कुरु 'जनपद' की राजधानियाँ-** हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ।
- **राजत्व की उत्पत्ति के संबंध में 2 सिद्धांत।**
    - ◦ **ऐतरेय ब्राह्मण** → राजत्व की उत्पत्ति की आम सहमति से चुनाव के तर्कसंगत सिद्धांत की व्याख्या की।
    - ◦ **तैत्रिरिय ब्राह्मण** → राजत्व की दिव्य उत्पत्ति की व्याख्या की।
- **राजा के पास पूर्ण शक्ति** थी - सभी विषयों का स्वामी।
- **शतपथ ब्राह्मण** - राजा अचूक और सभी प्रकार के दण्डो से मुक्त ।
- **ऋग्वैदिक काल की सभा बंद** कर दी गई।
- **राजा ने युद्ध**, **शांति** और **राजकोषीय नीतियों** जैसे मामलों **पर समिति** की सहायता और **समर्थन माँग ।**
- **सरकार** - इस अर्थ में **अधिक लोकतांत्रिक** कि आर्य जनजातियों के नेताओं के अधिकार को राजा द्वारा मान्यता दी गई थी।

समाज

- **4 वर्ण आश्रम व्यवस्था** – व्यवसाय पर कम आधारित और अधिक वंशानुगत।
    - **ब्राह्मण -**
        - **बौद्धिक और पुरोहित वर्ग**।
        - **उत्कृष्टता** के एक उच्च स्तर को **बनाए** रखते थे और **अनुष्ठानों** का **विवरण** जानते थे ।
    - **क्षत्रिय** -
        - **लड़ाकू** वर्ग।
        - **युद्ध**, **विजय**, **प्रशासन**- इस वर्ग के **प्रमुख कर्तव्य।**
        - **2 क्षत्रिय राजा** - जनक और विश्वामित्र **ने ऋषि का यह प्राप्त** किया।
    - **वैश्य** -
        - **व्यापार, उद्योग, कृषि** और **पशुपालन** करते थे ।
        - वैश्यों में **धनी लोग- श्रेष्ठिन**- शाही दरबार में **अत्यधिक सम्मानित।**
    - **शूद्र** -
        - **हालत दयनीय** → इनकी हालत दयनीय थी।
        - **अछूत → अस्पर्शनीय थे।**
        - पवित्र अग्नि के पास जाने अर्थात् **यज्ञ करने** या पवित्र **ग्रंथों को पढ़ने का** कोई **अधिकार नहीं** ।
        - **शवों के दहन/ जलाने** का **अधिकार नहीं था।**
- **'द्विज' -** ऊपरी 3 वर्णों के पुरुष सदस्य - 'उपनयन' के हकदार हैं अर्थात् पवित्र धागा (जनेऊ) पहनना।
- **जाति बहिर्विवाह** प्रचलित था।
- **कठोर सामाजिक पदानुक्रम** जिसने **सामाजिक गतिशीलता** को सिमित किया।
- **इस काल में संयुक्त परिवार की अवधारणा** में सामने आई।
- **परिवार में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन** किया जाता था।
- **समान गोत्र विवाह की अनुमति नही थी।**
- **'नियोग'** - एक नकारात्मक गतिविधि माना जाता है।
- **वर्तमान में 16 संस्कार हैं –** संस्कार व्यक्ति में सुधार लाने के लिए माने जाते हैं।

महिलाओं की स्थिति

- **इस काल में महिलाओं ने अपना उच्च स्थान खो दिया** जो ऋग्वैदिक युग में उनके पास था।
- उन्हें **उपनयन संस्कार का अधिकार नही** था।
- **उनके सभी संस्कार**, **विवाह को छोड़कर**, वैदिक **मंत्रों के पाठ** के **बिना** किए गए थे।
- **बहुविवाह** का प्रचलन था।
- कई **धार्मिक समारोह**, जो पहले पत्नी द्वारा किए जाते थे, **अब पुजारियों द्वारा** किए जाते थे।
- **राजनीतिक सभाओं में शामिल** होने की अनुमति **नहीं** थी।
- **बेटी का जन्म अवांछनीय** हो गया था।
- **बाल-विवाह** और **दहेज** की **प्रथा** धीरे-धीरे **बढ़ने लगी** ।

शिक्षा

- एक **सुनियोजित शिक्षा प्रणाली थी।**
- छात्र **वेद, उपनिषद, व्याकरण, छंद, कानून, अंकगणित और भाषा** सीखते थे **।**
- **उपनयन** समारोह - **शिक्षा की शुरुआत में** छात्रों को **शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाता** था ।
- **शिक्षक** (गुरु) के **घर में रहते थे** और एक **ब्रह्मचारी** के **पवित्र जीवन** का नेतृत्व करते थे, जिसका मुख्य कर्तव्य अध्ययन और शिक्षक की सेवा थी।
- **छात्रों को गुरु के आवास पर** नि:शुल्क **भोजन** एवं **आवास की सुविधा दी जाती थी।**
- **पढ़ाई पूरी होने के बाद शिक्षकों को गुरु-दक्षिणा दी जाती थी ।**